फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **314** 1/– *अगस्त* **2014**

हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

ये अखबार हर महीने 2 से 3 लाख मजदूरों के बीच घूमता है। हर किसी का इस अखबार से अपना खास रिश्ता बनता है। पढना, याद रखना, पढाना, आलोचना करना, सम्भाल कर रखना, फोटोकॉपी करके फैलाना, सूचना के कई स्रोतों से तुलना करना, आँकना, आजमाना, टैस्ट करना, परखना, बहस करना, इस्तेमाल करना, फाड़ना, फेंकना, रोटी लपेटने के काम में लेना, महत्त्व देना, आदर देना, और एक आनंद-दायक सम्बन्ध रखना।

ये इस अखबार का दैनिक जीवन है। हम में प्रत्येक का दैनिक जीवन इसी प्रकार की भिन्नताओं, रुचियों, अरुचियों, आदर, जिज्ञासा और विस्तार लिये हुये है। कुछ लोगों को इस विस्तार से ईर्ष्या होती है। उन में से कोई हमें कह बैठे, ''इतने विस्तार के लिये पैसा कहाँ से आता है ?'' लगा कि बात थोड़ी गहराई से ली जाये।

एक पत्रकार ने ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक सिलाई कारीगर से जानना चाहा कि मजदूर कितना न्यूनतम वेतन चाहते हैं ? टेलर ने विनम्रता से, हँसते हुये कहा कि महीने में एक मजदूर औसतन 18 से 20 लाख रुपये के बराबर का उत्पादन करती-करता है। और फिर आगे बोला कि लाख-दो लाख रख लीजिये, 17-18 लाख तो मिलना बनता है। 12-15 हजार की बहस करते रहें आप, पर हमारे लाखों को तो ओझल न करें।

इसी लहजे में सोचें, देखें, सुनें तो इस अखबार की हर महीने की 12,000 प्रतियाँ छापने में खर्चा दिल्ली सरकार द्वारा कुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन के बराबर है। एक साथी ने टोका कि उस से भी कम है। इतना तो मानना बनता ही है कि कुछ मित्रों के स्वैच्छिक योगदान से 10-20 हजार प्रतियाँ छापना तो एक बहुत ही मामूली बात है।

साथियो, मुश्किल अखबार छापने में नहीं है। आसपास जितना उत्साह, सहयोग और इच्छा है, उनके चलते एक लाख प्रतियाँ छापना भी कठिन नहीं है। हाल ही में कुछ छात्रों और युवा अध्यापकों ने एक नये औद्योगिक क्षेत्र में आदान-प्रदान के लिये, विचार-विमर्श को फैलाव में रखने के लिये 1000 प्रतियों की इच्छा जाहिर की। इसलिये इस महीने 13,000 प्रतियाँ छापी हैं।

जैसा कि हम ने कई अंकों में चिन्हित किया है, विवरण दिया है, दिल्ली के इर्द-गिर्द का औद्योगिक क्षेत्र आज विश्व के अत्याधिक जीवंत और अस्थिर क्षेत्रों में है। यहाँ दुनिया के सबसे जटिल बौद्धिक और व्यवहारिक सवाल उत्पन्न हो रहे हैं। हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि वर्तमान की दुविधाओं की तीव्र-तीक्ष्ण-नुकीली सम्भावनायें यहाँ सामने आ रही हैं। और आगे सात अरब लोगों को सराहता, उन की प्रशंसा करता जीवन प्रत्यक्ष होगा।

क्या ये हम हवा में बोल रहे हैं ?

हर महीने 20-25 व्यक्ति ओखला औद्योगिक क्षेत्र, उद्योग विहार (गुड़गाँव), आई.एम.टी. मानेसर और फरीदाबाद में 15 स्थानों पर अखबार का वितरण करते हैं। इस वितरण के दौरान हर महीने हजारों व्यक्तियों से अनेक प्रकार की बातचीतें होती हैं। ये कह सकते हैं आप कि वितरण करती-करता हर शख्स एक साल में कम से कम 10,000 व्यक्तियों से किसी न किसी तरह का संवाद रच लेता-लेती है। इन संवादों से आनंद-भाव की एक लहर उभर रही है। ये आनंद-भाव शिकायत, शोषण, पीड़ा से टकराता है, पर साथ-साथ कुछ और भी उभार के लाता है। थकान, हताशा, निराशा, गुस्सा, असहायता के भाव को किनारे कर देता है, कोने में धकेल देता है।

पिछले एक साल से कई अंकों में तरह-तरह से हम ''राजनैतिक कैदियों'' की नई श्रेणी का जिक्र और चर्चा कर रहे हैं। ये बात लाखों के बीच गई है और अभी तक एक ने भी इसे अटपटा अथवा गलत नहीं कहा है। बल्कि, इसकी चर्चा अन्य स्थानों में फैली है और कई मंचों पर की जा रही है। ''राजनैतिक कैदियों'' की इस श्रेणी में दिल्ली के इर्द-गिर्द ही 500-600 फैक्ट्री मजदूर आज हैं। बिना जमानत के इन्हें सालों से जेल में बंदी रखा जा रहा है। ये राजनैतिक कैदी हैं, इस पर आम सहमति है। पर यहाँ हम एक इच्छा रेखांकित करना चाहते हैं जो बातचीत में आ चुकी है, लेकिन व्यवहार में ठोस आकार ग्रहण नहीं कर सकी है। ये इच्छा है कि राजनैतिक कैदियों की मुक्ति के लिये हर व्यक्ति और समूह किस तरह से दबाव बनाने में शामिल हो सकते हैं।

कई बातें, कई सलाहें इस बारे में आती रहती हैं। इन में से कुछ ये हैं : टी-ब्रेक में, लन्च ब्रेक में, बस में, शिफ्ट छूटते समय, शिफ्ट आरम्भ होते वक्त, पड़ोस में, चाय की दुकान पर, पान की दुकान पर, ढाबों में, पार्क में, दावतों में, गाँव में, एस एम एस द्वारा, हाथ से लिखे पर्चों पर, पोस्टरों पर, चिट्ठीयों में, गत्तों पर लिख कर, टी-शर्ट पर छाप कर, नाई की दुकान पर, कॉलेज कैन्टीन में, कक्षाओं में, बैठकों में, गोष्ठियों में, लेखों में, वक्तव्यों में, कहानियों में, कविताओं में, ब्लॉगों में, फेसबुक पर, ट्विटर पर, दफ्तरों में, यात्राओं में, तीर्थ-यात्राओं में, दोस्तों के बीच, सम्पादकों को पत्रों में, अनुवादों में – हर जगह, सब से, जब भी समय मिले – इन राजनैतिक कैदियों के बारे में बातें करना। ये फैलाव अपने में दबाव लिये है, वो दबाव जो कि सत्ता के दुर्बल पर घमण्डी आवरण को अस्त-व्यस्त करता है।

जेल में जा कर राजनैतिक कैदियों से मिलें। ये बातचीत उनके साथ भी करना बनता है।■

नाकारा हुआ, लड़खड़ाता कानून का राज

रुपये-पैसे को जीवन की धुरी बनाये रखने के लिये विधान-संविधान हैं। कम्पनियाँ और सरकारें जीवन को रुपये-पैसे से बाँधने-जकड़ने के औजार हैं। नियम-कानून कम्पनियों और सरकारों की सुरक्षा के कवच हैं। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। आज कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। यह स्वागत-योग्य स्थिति है। रुपये-पैसे, मण्डी-मुद्रा, ऊँच-नीच का यह अन्तिम चरण है। नई रचना की पूर्व वेला है, सामाजिक मन्थन नित नई तीव्रता और गहराई प्राप्त कर रहा है।

✶ ***ओरियन्ट क्राफ्ट मजदूर :*** ''प्लॉट 11-12-13 सैक्टर-5, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात पौने एक तक ड्युटी में कम्पनी भोजन देती थी। भोजन में मात्र 3 रोटी और 2 चम्मच चावल। मजदूरों ने कई बार जनरल मैनेजर से कहा कि पेट नहीं भरता पर साहब बोलता कि जितना मिलता है उतना ही मिलेगा। जून-जुलाई 2013 में सिलाई कारीगरों ने आपस में बातचीतें की। एक दिन कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 1000 टेलर और ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 टेलर ओवर टाइम पर नहीं रुके। पौने छह बजे प्रोडक्शन का पूरा फ्लोर खाली। जनरल मैनेजर फिर बोला कि भोजन बढाना हाथ में नहीं है। दूसरे दिन भी सिलाई कारीगरों ने पौने छह बजे छुट्टी कर ली। तीसरे दिन जनरल मैनेजर बोला कि ओवर टाइम करो, खाना बढा दिया है, 3 की जगह 5 रोटी और 2 की जगह 3 चम्मच चावल। कम्पनी ने जनरल मैनेजर को नौकरी से निकाल दिया। इधर जनवरी 2014 में सुबह 9 से रात पौने दस वाला नियम कम्पनी ने लागू किया — खाना खाओ जाओ। रात पौने एक बजे तक रोकते थे तब एक घण्टे का लन्च ब्रेक रहता पर इधर रात पौने दस बजे ओवर टाइम पर रखी 6-7 लाइनें इकट्ठी छोड़ने लगे। कैन्टीन में इतनी जगह ही नहीं, थाली 300 ही, धक्का-मुक्की। गार्ड ने एक रोज एक टेलर के थप्पड़ मारा। अगले दिन, 17 जनवरी को सुबह 9 बजे सब सिलाई कारीगर फैक्ट्री गेट पर खड़े हो गये। स्टाफ आया, बोला अन्दर चलो, टेलर नहीं गये...... इस बार भी कम्पनी ने जनरल मैनेजर को नौकरी से निकाल दिया। ओरियन्ट क्राफ्ट में ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है।''

✶ ***यामाहा मोटर श्रमिक :*** ''न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया, मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में मोटरसाइकिल और स्कूटी के हिस्से-पुर्जे बनते हैं, असेम्बली यामाहा सूरजपुर फैक्ट्री में। यामाहा स्कूटी का उत्पादन डेढेक वर्ष पहले आरम्भ हुआ है और तब से यहाँ काम का बोझ दुगुना हो गया है। पार्ट्स की पहले एक शिफ्ट में 4-5 गाड़ी लोड होती थी, अब 10-11 होती हैं, 9 गाड़ी तो सूरजपुर प्लान्ट भेजनी ही भेजनी हैं। यामाहा में 1999 से किसी मजदूर को स्थाई नहीं किया है, परमानेन्ट वरकर बुजुर्ग हैं, हम उन्हें सर कहते हैं और वे मजदूरों का दस प्रतिशत से भी कम हैं। फैक्ट्री में डिप्लोमा वाले ट्रेनी भी हैं और वे लाइन पर काम करते हैं, सी एन सी, वी एम सी चलाते हैं। ज्यादातर काम, बल्कि सारा ही काम चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे आई.टी.आई. किये तथा बिना आई.टी.आई. वाले मजदूर करते हैं। इधर 6-7 महीनों से ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के 45 रुपये प्रतिदिन के बढाये हैं, वास्तव में 40 ही बढाये हैं और यह भी फैक्ट्री में उपस्थित वाले दिन के ही। यह 40-45 बढाये हैं स्थाई मजदूरों के तीन वर्षीय दीर्घकालीन समझौते में 15,000 रुपये बढाने के संग। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को स्थाई मजदूरों की तनखा का सातवाँ-दसवाँ हिस्सा मिलता है। परमानेन्ट मजदूरों को तथा डिप्लोमा ट्रेनी को भी कम्पनी 6 महीने में जूते और वर्दी देती है लेकिन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को नहीं देती। इधर परसनल में आये नये अधिकारी ने ठेकेदारों के जरिये रखे 3-4 वर्ष से काम कर रहे पुराने मजदूरों को निकालने और नये मजदूर भर्ती करने का आदेश दिया है।''

✶ ***ऑटो डेकॉर कामगार :*** '' प्लॉट 91 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर 15 और फिर 16 जुलाई को फैक्ट्री गेट पर ही नहीं गये। सत्तर स्थाई मजदूरों और पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 300 के करीब मजदूरों द्वारा मिल कर उठाये इस कदम के बाद कम्पनी ने 17 जुलाई को जून माह की तनखा दी। अप्रैल, मई, जून में किये ओवर टाइम का भुगतान आज 23 जुलाई तक नहीं किया है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, रविवार को भी काम। स्थाई मजदूरों को 2012 तक ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते थे पर घाटा है कह कर अब सब मजदूरों को सिंगल रेट से पैसे देते हैं। एक मजदूर फैक्ट्री में 12 जुलाई को लिफ्ट से गिरा, दोनों पैर टूटे, ई.एस.आई. अस्पताल ले गये — भर्ती नहीं किया, ई.एस.आई. जमा नहीं है। दूसरे अस्पताल ले गये, रोड डाली, 20,000 रुपये खर्च, हम मजदूरों ने आपस में इकट्ठे किये, प्लास्टर चढे पैरों के साथ वह घर गया है। फैक्ट्री में इंजेक्शन मोल्डिंग के जरिये ***मारुति सुजुकी*** और ***होण्डा*** का काम होता है। कम्पनी की प्लॉट 469-470-471 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, रुद्रपुर में फैक्ट्रियाँ हैं तथा नई फैक्ट्री बंगलुरू में। और ढाई वर्ष से कम्पनी ने स्थाई मजदूरों की ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि जमा नहीं की हैं। अक्टूबर 2013 से फैक्ट्री में कैन्टीन बन्द कर दी है।''

✶ ***अनिल रबड़ मिल वरकर :*** ''प्लॉट 30 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से 4½ और साँय 4½ से अगली सुबह 8 बजे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान स्थाई मजदूरों को दुगुनी दर से और कैजुअल वरकरों को सिंगल रेट से, 10-12 घण्टे खा भी जाते हैं। यहाँ 15 से 200 मीटर की कनवेयर बैल्ट बनती हैं, एक मीटर 35-40 किलो का। गर्म, बहुत गर्म काम है, बनियान-निक्कर में काम करते हैं, शॉपफ्लोर पर एक भी पँखा नहीं है। पानी खारा, भोजन अवकाश में मजदूर बाहर से लाते हैं और टुच्चापन देखिये, मैनेजर कहता है कि अपने घर से पानी लाओ, खाना ला सकते हो तो पानी क्यों नहीं ला सकते। भर्ती पर 3 महीने के लिये कम्पनी अटेन्डैन्स कार्ड देती है, ई.एस.आई. तथा पी.एफ. काटती है। तीन महीने बाद कार्ड नहीं, गेट पर रजिस्टर में नाम लिखते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

✶ ***कोसमो इण्डिया मजदूर :*** ''प्लॉट 431 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 10 बजे की ड्युटी रोज, रविवार को 8 घण्टे। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. की राशि काटते हैं, पी.एफ. की नहीं जबकि फैक्ट्री में 55 मजदूर हैं। कुछ पुरानों की तनखा 6500 रुपये है और बाकी की 5200 रुपये। तनखा हर महीने देरी से, जून की 18 जुलाई को दी। डायरेक्टर दिल्ली में जनकपुरी से विधायक का बेटा है और कहता है कि चाहे प्रधान मंत्री को बोल दो, तनखा 7 की जगह 18 तारीख को ही देंगे। तनखा माँगने पर डायरेक्टर मारपीट पर उतर आता है, एक गार्ड ने वेतन माँगा तो दीवार में उसका सिर मारा, पुलिस, समझौता। यहाँ ***मारुति सुजुकी*** के व्हीलवेट बनते हैं।''

✶ ***शाही एक्सपोर्ट श्रमिक :*** '' 15/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 26 जुलाई को हर फ्लोर का आर.ओ. खराब। जमीन का पानी चलाया, पानी खराब, मजदूरों ने एच आर में शिकायत की।

(शेष पृष्ठ चार पर)

युवा मजदूर के कुछ अनुभव और विचार

बारहवीं की परीक्षा दे कर ***लखानी फुटवियर*** (प्लॉट 130 सैक्टर-24, फरीदाबाद) में लगा। दो पुराने जमाने की और दो नये जमाने की कनवेयर — नये जमाने की कनवेयर पर लगा जहाँ ***एडिडास*** के जूते बनते थे। हाई क्वालिटी, हर घण्टे इन्सपैक्टर आता, एडिडास वाले आते तब 8 घण्टे में 150 जोड़ी बनवाते। मैनेजर बहुत जोर से चिल्लाता, माँ-बहन की गाली देता।

एडिडास लाइन पर काम कर रहे लड़कों में तालमेल हुआ। जनवरी 2011 में हम ने दो दिन उत्पादन कम किया। किसी ने सुपरवाइजर से चुगली की। सुपरवाइजर ने मैनेजर को बताया। हमारे बीच तालमेल बैठाने में सक्रिय ऑपरेटर की पेशी हुई। उत्पादन फिर 300 जोड़ी।

पार्टी वाले आ रहे हैं कह कर पेन्ट करवाया। समझाया कि कहनाः मास्क मिलता है, कम्पनी जूते देती है, लिक्विड सोप से हाथ धोने के बाद काम करते हैं..... सब झूठ — मास्क नहीं, जूते नहीं, लिक्विड तो क्या साबुन की बट्टी नहीं। आई वाश के नाम से एक टब बना रखा था, आँख में केमिकल पड़ जाये तो प्रयोग के लिये, पर उसमें कुछ नहीं रहता था, खाली दिखावा।

एक दिन हम सब काम कर रहे थे और एक खड़ा था। मैंने कहा कि काम कर ले तो वह बोला कि तेरे बाप की फैक्ट्री है क्या, और गाली दी। हम दोनों में झगड़ा हुआ। सुपरवाइजर ने अलग किये। ड्युटी छूटने के बाद फैक्ट्री के बाहर दो स्थानों पर हमारे बीच फिर लड़ाई हुई। दूसरे दिन वह फैक्ट्री गया और उसे नौकरी से निकाल दिया। मैं दूसरे दिन गया ही नहीं और फिर रविवार की छुट्टी के बाद फैक्ट्री गया तब मुझे भी नौकरी से निकाल दिया। सात महीने पूरे होने से पहले ही 8 फरवरी 2011 को मेरा ब्रेक कर दिया।

स्कूल में सोचता था : कम्पनी जाऊँगा, काम करके घर आ जाऊँगा, इस में कौन-सा मुश्किल काम है। फैक्ट्री में जा कर देखा : मैनेजर-सुपरवाइजर की डाँट-गाली सुननी पड़ती हैं, आपस में मजदूरों में झगड़े होते हैं, साथी मजदूर ही सुपरवाइजर से चुगली कर देते हैं, मिल कर कदम उठाने के लिये तालमेल बनते रहते हैं।

लखानी फुटवियर में कैजुअल वरकर था, कम्पनी ने खुद भर्ती किया था, 8½ घण्टे की ड्युटी थी, ग्रेड था, ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से, ई.एस.आई. तथा पी.एफ., बोनस ...... दिवाली के समय जो काम नहीं कर रहे होते उन्हें बोनस नहीं मिलता इसलिये अरमान समूह की ही ***लखानी शूज*** (प्लॉट 119 सैक्टर-24) में लगा। बोनस के लिये आवेदन लिखा, साहब ने हस्ताक्षर नहीं किये। प्लॉट 119 में लाइन से अलग काम था, सोल पर सोल्युशन लगाने वाला फटाफट काम था और प्रोडक्शन ज्यादा था, भारी था। बोनस के पैसे नहीं मिले इसलिये दो दिन काम के बाद फैक्ट्री छोड़ दी।

मार्च 2011 में ***ब्राइट ब्रदर्स*** (प्लॉट 16-17, सैक्टर-24, फरीदाबाद) में ठेकेदार के जरिये लगा। इंजेक्शन मोल्डिंग विभाग में लगा, हीटर, बहुत गर्मी रहती। कहने को 8 घण्टे की ड्युटी पर मोल्डिंग और प्रिन्टिंग वालों के लिये 16 घण्टे से पहले गेट खोलते ही नहीं। गर्मी से बीमार हो जाते, उल्टी-चक्कर, गोली दे देते, काम करो। करीब 200 मजदूर और सब को गुड़गाँव की एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा था। यहाँ ***व्हर्लपूल*** का काम होता है। व्हर्लपूल से स्टाफ और स्थाई मजदूर आते हैं, डाई सैटिंग करते हैं, प्रोडक्शन लिखते हैं, क्वालिटी देखते हैं। ब्राइट ब्रदर्स को पीस रेट से व्हर्लपूल कम्पनी पैसे देती है।

जबरन ओवर टाइम पर रोकते थे इसलिये 4 महीने काम करने के बाद नौकरी छोड़ दी। तनखा में गड़बड़ी, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और घण्टों में गड़बड़ी, ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि वेतन से काटते पर छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिले।

ब्राइट के बाद ***यूनिमैक्स लैबोरेट्री*** (प्लॉट 7 सैक्टर-24, फरीदाबाद) में फैक्ट्री गेट से लगा। स्टोर में माल अन्दर-बाहर करो, गाड़ी लोड-अनलोड करो — भारी काम, मुझ से नहीं होता था, मजबूरी में किया। पैकिंग वाली लड़कियाँ चली जाती तब वहाँ दो घण्टे ओवर टाइम करता। पैसे सिंगल रेट से देते, मुझे मालूम था कि ओवर टाइम का भुगतान डबल रेट से होना चाहिये — पता चला मजदूर समाचार से, पापा ले जाते थे, स्कूल में था तभी से पढता हूँ। एक दिन एक लड़का सुबह से परेशान करने लगा, स्टाफ के इशारे पर, यह करो-वह करो, यहाँ आओ-वहाँ जाओ। लन्च के बाद उसने बहन की गाली दी तो मैंने उसे लात-घूँसों से मारा। टाइम ऑफिस से आये साहब ने दोनों से बयान लिया और फिर इस्तीफे लिखवा कर दोनों को नौकरी से निकाल दिया। दवाई फैक्ट्री थी, सफाई रहती थी, तीन महीने काम किया, फण्ड के पैसे मिल गये।

यूनिमैक्स के बाद ***ओमको इन्टरप्राइजेज*** (30 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) में लगा। सुबह 8 से रात 8 की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ ऑटो पार्ट्स बनते थे, सी एन सी सीखी और चलाई। पाँच वर्ष से काम कर रहे एक स्टाफ वाले की लड़की की शादी थी, फण्ड निकलवाने गया, भविष्य निधि कार्यालय से पता चला कि पी.एफ. जमा नहीं है। फिर हम सब पी.एफ. आफिस गये पता करने — किसी का जमा नहीं। एक यूनियन के मेम्बर बने और मिल कर एक वकील भी किया कोर्ट केस के लिये। यूनियनवाला और वकील फैक्ट्री आये, डायरेक्टर से बात की। स्टाफ के 5 का पी.एफ. जमा कर दिया। सब मजदूर निकाल दिये — किसी भी वरकर को फण्ड नहीं मिला। नये सिरे से भर्ती की, ई.एस.आई. तथा पी.एफ. काटने बन्द कर दिये। मैं भी वहीं लग गया। एक दिन सी एन सी सैटर से लड़ाई हो गई, डायरेक्टर के पास ले गया, नौकरी से निकाल दिया। चार महीने यहाँ काम किया।

ओमको के बाद अब जहाँ ***इण्डो ब्रिटिश गारमेन्ट्स*** फैक्ट्री (प्लॉट 23 सैक्टर-24) है वहाँ पाइप फैक्ट्री थी, गेट पर नाम नहीं लिखा था, वहाँ लगा। लोडिंग-अनलोडिंग का भारी काम, दस्ताने नहीं, हाथ छिल-कट जाते, ई.एस.आई. नहीं। हाथ काले हो जाते, साबुन नहीं। ड्युटी 12 घण्टे, ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्पर ग्रेड 5200 का था, देते 4500 रुपये। दस दिन काम करके छोड़ दिया।

पाइप फैक्ट्री के बाद वहीं ***राहुल इन्टरप्राइजेज*** (प्लॉट 33 सैक्टर-24) में सी एन सी ऑपरेटर लगा। हैल्पर के 5200 की बजाय सी एन सी ऑपरेटर को 4300 रुपये और पैकिंग में महिला मजदूरों को 4000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से, सप्ताह में शिफ्ट बदलती तब शनिवार को 7 बजे लगते नाइट शिफ्ट वाले रविवार साँय 7 बजे छूटते, लगातार 24 घण्टे ड्युटी करते। सी एन सी एक लड़की भी चलाती थी, **(शेष पृष्ठ चार पर)**

निमंत्रण

अगस्त में 24 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

युवा मजदूर के कुछ अनुभव (पृष्ठ तीन का शेष)

छेड़छाड़ होती थी, मुझे पसन्द नहीं, देखता रहता था, ओवर टाइम में मैं चाय-मट्ठी नहीं लेता, लड़की मजाक उड़ाती थी और एक दिन बहन की गाली दी तो मैंने उसे थप्पड़ मार दिया। लड़की ने लोहे का पीस मारा, बच गया, प्रोगामर-सैटर आये, बात रफा-दफा। बाहर पिटवाने की धमकी। काला-पीला काम, 12 घण्टे खड़ा-खड़ा थक जाता। तीन महीने काम करके छोड़ दिया।

राहुल इन्टरप्राइजेज के बाद ***कटलर हैमर*** (20/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) में 24 मार्च 2013 को लगा। वहाँ 5 वर्ष से कार्यरत एक ऑपरेटर से मैंने कहा था कि ठेकेदार के जरिये नहीं लगूँगा क्योंकि वे पी.एफ. खा जाते हैं, ओवर टाइम में गड़बड़ करते हैं पर उसने भरोसा दिलाया कि ऐसा नहीं होगा। कटलर हैमर में काम करते एक हफ्ता हुआ तब ब्रेक दिया, 4 दिन बाद फिर लगा लिया। पाँच महीने बाद एक ठेकेदार भाग गया, नया ठेकेदार आया। मुझे इस से उस ठेकेदार के खाते में डाला। फिर काम कम होने पर जनवरी 2014 में निकाल दिया। असेम्बली में लिमिट स्विच बनाता था। पानी ठीक नहीं, पुराने जमाने के पँखे, शौचालय गन्दे। पी एफ में गड़बड़ — एक ठेकेदार से 5 महीने का फण्ड 3500 रुपये और दूसरे से 5 महीने का 4500 आया। किसी से झगड़ा नहीं हुआ।

कटलर हैमर से निकाले जाने के बाद ***आइडिया कॉल सेन्टर*** (ई.एस.आई. रोड़, एन एच-3, फरीदाबाद) में लगा। एक सप्ताह टेली कॉलर की ट्रेनिंग, इस दौरान कोई पैसे नहीं। आठ घण्टे में 100 कॉल, सिम के दो कस्टमर बनाना, महीने का टारगेट 20 कस्टमर, 20 से अधिक पर इनसेन्टिव और कम पर पहले चेतावनी तथा फिर पैसे कटेंगे। पचास वरकरों में 30 लड़कियाँ। सुबह 9 से साँय 6 की ड्युटी, डोमैस्टिक, हिन्दी में बात करना, तनखा 5000 रुपये। ट्रेनिंग के बाद एक दिन ही काम किया था कि गाँव से विवाह का प्रस्ताव आया।

डेढ महीने गाँव रहा। शादी के बाद आइडिया कॉल सेन्टर गया ही नहीं। कटलर हैमर में 10 अप्रैल को फिर लगा। मेरे ऊपर ठेकेदार कम्पनियों में झगड़ा, एच आर ने ठेकेदार तय किया। तनखा 5548 रुपये लगाई। मैनेजर से मिला। एक वर्ष काम कर चुका हूँ, विवाह, खर्चा बढ गया है, पैसे बढाओ। ऊपर से आदेश नहीं है कह कर मैनेजर ने मना कर दिया। मैनेजर से बात करने के दो दिन बाद, 21 मई को ठेकेदार ने नौकरी से निकाल दिया।

पिताजी रोज 12 घण्टे ड्युटी करते हैं, दोनों छोटे भाई भी नौकरी करते हैं, मैं भी 5548 रुपये तनखा में नई जगह लग गया हूँ। परिवार में अब 5 सदस्य, किराये के मकान में रहते हैं।

लड़खड़ाता कानून का राज (पृष्ठ दो का शेष)

करीब 3 बजे ग्राउण्ड फ्लोर का आर ओ ठीक हुआ, तीनों फ्लोर के बन्दे वहाँ पानी पीने जाने लगे। फर्स्ट फ्लोर की एक महिला मजदूर बोतल में पानी भरने लगी दूसरी महिला के लिये जिसे चक्कर आ रहा था। लेड़ी गार्ड ने उसका कार्ड छीना और उसे एच आर ले गई। वहाँ इस्तीफा लिखवा लिया। नीचे आ कर उसने लेडी गार्ड के चार थप्पड़ जड़ दिये। एक स्पॉटर को 28 जुलाई को जनरल मैनेजर ने तम्बाकू बनाते हुये देखा। फ्लोर मैनेजर के पास ले गया। वहाँ साहब इतनी बुरी तरह चिल्लाया कि वरकर बेहोश हो गया। तब बेहोश मजदूर को उठा कर नीचे मेडिकल में ले गये।''

*✶ आई एम टी मानेसर में **बैक्सटर फैक्ट्री** की चर्चा पिछले अंकों में है। यूनियन लीडरों ने 27 मई से गेट बाहर बैठे 300 मजदूरों को यह-वह कारण बता कर जून ही नहीं बल्कि पूरी जुलाई भी झाँसा दिया। इधर 3 अगस्त को शीघ्र कदम की बातें...... मजदूरों को थकाने के जाँचे-परखे तरीके हैं। ✶ आई एम टी मानेसर में ही **ऑटोलिव** फैक्ट्री (203 सैक्टर-4) की चर्चा भी कर चुके हैं। यहाँ सरकारी विभागों के संग-संग होटलों में सौदेबाजी करते यूनियन लीडरों ने चुपचाप 54 स्थाई मजदूरों का 29 जुलाई को हिसाब करवा दिया। अकेले पड़े ठेकेदारों के जरिये रखे 130 मजदूर नहीं हटे तब कम्पनी ने प्रत्येक को 1 अगस्त को 10-10 हजार रुपये दिये।*

सरकार का बजट

हाल ही में संसद में वित्त मंत्री ने भारत में सरकार का जो वर्ष-भर की आमदनी और खर्च का ब्यौरा प्रस्तुत किया है उस में विश्व-भर में सरकारों की आय-व्यय की एक छवि उभरती है। अगर आमदनी 100 है तो खर्चे कुछ इस प्रकार हैं : 50 तो सरकार द्वारा लिये पुराने कर्ज के ब्याज और कुछ मूल के भुगतान में जाते हैं। 30 फौज को बनाये रखने के लिये। 12 प्रशासनिक तन्त्र के वेतन-भत्तों के लिये। पेन्शन के लिये 7। यह हुआ 100 में 99। इसके बाद स्कूल-कॉलेज-रिसर्च, अस्पताल के लिये 7। यह हुआ 106। फिर सड़क, बाँध-नहर, बिजली, पानी हैं जिनके लिये जो खर्च होना है वह नये कर्जों से ही आ सकता है। सब मिला कर आमदनी 100 और खर्चा 150। हर सरकार की आय और व्यय के बीच की दूरी हर वर्ष बढती जा रही है। मंत्री, अधिकारी, अर्थशास्त्री, बुद्धिजीवी, प्रचारक लगे हुये हैं।

कम्पनियों का बजट

कुछ कम्पनियों पर कर्ज की मात्रायें यह हैं :

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया — 15 लाख 77 हजार 539 करोड़ रुपये
बैंक ऑफ बड़ौदा — 6 लाख 5 हजार 707 करोड़ रुपये
पंजाब नेशनल बैंक — 4 लाख 99 हजार 431 करोड़ रुपये
रिलायन्स इंडिया लिमिटेड — 85 हजार 481 करोड़ रुपये
नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन — 62 हजार 405 करोड़ रुपये
हिन्दुस्तान पैट्रौलियम कॉरपोरेशन — 32 हजार 458 करोड़ रुपये
रिलायन्स कम्युनिकेशन — 30 हजार 327 करोड़ रुपये
टाटा स्टील — 26 हजार 126 करोड़ रुपये
हिण्डालको — 24 हजार 144 करोड़ रुपये
अदानी पावर — 22 हजार 317 करोड़ रुपये
जिन्दल स्टील — 19 हजार 500 करोड़ रुपये
आइडिया सेलुलर — 17 हजार 753 करोड़ रुपये
टाटा मोटर — 14 हजार 515 करोड़ रुपये
भारती एयरटेल — 12 हजार 979 करोड़ रुपये
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड — 11 हजार 538 करोड़ रुपये
डी एल एफ — 11 हजार 101 करोड़ रुपये
एमटेक ऑटो — 6 हजार 32 करोड़ रुपये

सब कम्पनियों के बजट में कर्ज की मात्रा उल्लेखनीय है, बहुत महत्त्वपूर्ण है। कर्ज के यह पैसे आते कहाँ से हैं ? करोड़ों लोगों की बैंकों में जमा राशि, करोड़ों लोगों की जीवन बीमा की राशि, प्रोविडेन्ट फण्ड, पेन्शन फण्ड वह स्रोत हैं जिन से कर्ज की राशि आती है।

✶ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।

✶ महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।